कुल पृष्ठ संख्या–32 (कवर पेज सहित)

क्रम संख्या....

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

उच्च माध्यमिक परीक्षा

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिये)

Candidate's Roll No. In English

(In Figures)

(In Words) ----

परीक्षार्थी का नामांक हिन्दी में

शब्दों में ----

नोट :– परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम – हिन्दी ✓ अंग्रेजी

विषय .... हिंदी

परीक्षा का दिन..........

दिनांक ....

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :– (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य है, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जावेगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत्त करें।

(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदाहरणार्थ : 15 ¼ को 16, 17 ½ को 18, 19 ¾ को 20)

प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी
(परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1		19	
2		20	
3		21	
4		22	
5		23	
6		24	
7		25	
8		26	
9		27	
10		28	
11		29	
12		30	
13		31	
14		योग	
15		प्राप्त अंकों का कुल योग (Roundoff)	
16		अंकों में	शब्दों में
17			
18			

परीक्षक के हस्ताक्षर .... संकेतांक

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तक के निर्माण में 58 जी.एस.एम. क्रीमवोव कागज ही उपयोग में लिया गया है। 158/2016

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका पृथक से उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशंषा पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी।
   (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
   (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर–पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिये।
   (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केलक्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रोनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध है।
   (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ न लिखकर लावें। टेबुल के आस–पास कोई अवैध सामग्री नहीं होनी चाहिये, इसकी जांच कर लें।
   (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न–पत्र हिन्दी–अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित हैं। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

परीक्षार्थी उत्तर

1 (खण्ड - क)

1) काव्यांश:-
विचार लो कि ... मनुष्य के लिए मरो।

उत्तर
अ) "विचार लो कि मर्त्य हो" इसके अनुसार कवि यह भाव व्यंजित करना चाहता है कि मानव जीवन तो क्षणिक है, नश्वर है तथा उसे तो नष्ट होना ही है, इसीलिए हमें कभी जीवन की परवाह नही चाहिए तथा यदि हमें मरना भी पड़े तो हमें ऐसे कार्य को करते हुए मरना चाहिए, ताकि हमें ~~आने वाले~~ लोग याद करें।

उत्तर
ब) कवि के अनुसार प्रस्तुत काव्यांश मे बताया गया है कि मनुष्य यदि सदैव स्वयं के स्वार्थ मे ही लगा रहे तथा सदैव अपने लिए ही जिए तथा दूसरो की मदद या दूसरो के प्रति उदारता भी न रखे तो यह प्रवृत्ति पशु प्रवृत्ति के समान है। सदैव अपने हित मे, अपने स्वार्थ मे लगे रहना पशु प्रवृत्ति है।

उत्तर
(स) सृष्टि मे यदि मनुष्य विश्व मे असीम अखण्डता का भाव पैदा करने की कोशिश करे तथा यदि मनुष्य दूसरो के हित के लिए अपने जीवन को भी कुर्बान कर दे तथा मर जाए, तो ऐसे मनुष्य की उदारता की ~~कीर्ति~~ कीर्ति समस्त विश्व मे प्रसारित होती है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न | परीक्षार्थी उत्तर

उत्तर (द) "वही मनुष्य है जो मनुष्य के लिए मरे"
इस पंक्ति मे "परोपकार" तथा "दूसरो की सहायता" करने का भाव व्यंजित किया गया है। कवि के अनुसार वह मनुष्य जो दूसरो के हित के लिए अपने प्राण न्योछावर कर दे, उसका ही जीवन श्रेष्ठ है।

(2) अपठित गद्यांश:-

आज हमारी ...... विकासशील है।

उत्तर
(अ) लेखक के अनुसार युवा वर्ग राष्ट्र की आत्मा होते है अतः युवा वर्ग को अनुप्राणित करके ही राष्ट्रीय जागरण किया जा सकता है। युवा वर्ग मे चेतना जाग्रत करके ही राष्ट्रीय जागरण
(ब) किया जा सकता है।

(क) सरल वाक्य-

"आज हमारी कठिनाईयो मे वृद्धि का कारण स्वतंत्रता के पश्चात हमारा तेजी से आसानी की ओर भागना है।"

(स) "स्वावलम्बी" शब्द मे मूल शब्द - "अवलंब"
उपसर्ग - "स्व"
प्रत्यय - "ई" है।

प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

(c) उत्तर
शीर्षक:- "राष्ट्रीय जागरण: एक महत्ती आवश्यकता"

"खण्ड-ख"

(4) उत्तर ↓

प्रतिवेदन:- "ध्वनि विस्तारक यन्त्र के अनुचित प्रयोग"

बून्दी, 5 मार्च, 2016। शहर मे एक ओर जहॉं विद्यालयो, महाविद्यालयो मे परीक्षार्थी परीक्षा दे रहे है, वहीं दूसरी ओर विवाह स्थलो पर लगातार ऊॅची आवाज मे ध्वनि विस्तारक यन्त्र बज रहे है। विद्यार्थी परेशान है, लेकिन अपनी पीड़ा को वे किसी के सामने व्यक्त नही कर पा रहे है, क्योकि उनकी सुनने वाला कोई भी नही है। शहर की प्रशासन व्यवस्था इस पर चुप्पी साधे हुए है, अभिभावक कई बार अन्दोलन के रूप मे प्रशासनिक अधिकारियो को ज्ञापन देकर चेता चुके है, लेकिन उनके कान पर जूॅ तक नही रेंगती है। तेजी से बजते ध्वनि विस्तारक यन्त्रो के कारण टिनिस, कर्ण पट्ट फटना / कम सुनाई देना जैसी बिमारियॉं सिर उठा रही है। ध्वनि विस्तारक यन्त्रो का हर जगह दुरुपयोग हो रहा है लेकिन प्रशासन समझने को तैयार नही है। प्रशासन को चाहिए कि वे परीक्षा के दौरान या तो इनके प्रयोग पर प्रतिबन्ध लगाए या इनके चलने की एक निश्चित समयावधि निर्धारित करे। तभी कुछ हो सकता है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न | परीक्षार्थी उत्तर

(5) पत्र

प्रेषक

प्रधानाचार्य

राजकीय उच्च मा० विद्यालय

चौरु

श्रीमान निदेशक महोदय,

माध्यमिक शिक्षा राजस्थान

बीकानेर

विषय: व्याख्याता के रिक्त पदो को भरने हेतु।

मान्यवर,

~~सविनय~~विनम्र निवेदन है कि मैं आपका ध्यान राजकीय उच्च मा० विद्यालय में चल रही व्याख्याताओ की कमी की ओर आकृष्ट कराना चाहता हूं। उल्लेखनीय है कि विद्यालय के विज्ञान विभाग मे भौतिकी, रसायन विज्ञान के व्याख्याता उपलब्ध नही है, जिसके कारण उच्च माध्यमिक कक्षाओ मे ~~विद्यार्थि~~ विद्यार्थियो की शिक्षा बाधित हो रही है। विद्यार्थी इस विषय मे चिंतित है, क्योकि परीक्षाएँ सिर पर है लेकिन अभी तक उनका पाठ्यक्रम पूरा नही हो पाया है। आगामी समय मे कक्षा 12वीं मे आने वाले विद्यार्थी भी इस विषय को लेकर चिंतित है, क्योकि यह उनके भविष्य का प्रश्न है,

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

अतः मेरा आपसे निवेदन है कि विद्यालय मे शीघ्रातिशीघ्र विज्ञान विभाग के व्याख्याता उपर कराए जाए ताकि उच्च माध्यमिक स्तर पर शिक्षण कार्य सुचारु रुप से चल सके।

हमारे पक्ष मे निर्णय की आशा के साथ।

भवदीय
प्रधानाचार्य
राजकीय उच्च माध्य. विद्यालय
चौरु (राज.)

उत्तर
(6) आलेख - " निःशुल्क कन्या शिक्षण "

नर तथा नारी जीवन रुपी रथ के दो ऐसे पहिए है जिनके समुचित सन्तुलन के बिना जीवनरुपी रथ के चलने की बात तो दूर उसके स्थिर होकर खड़े होने की बात भी नही की जा सकती है। शायद इसी बात के महत्व को देखते हुए आज भारत सरकार ने लड़के तथा लड़कियो को एक समान बना लेने की बात सोची है इसी कारण उनकी द्वारा कन्या शिक्षा को निःशुल्क कर दिया गया। वर्तमान मे भारत सरकार ने एक नियम पारित करते हुए सभी सरकारी विद्यालयो मे कन्या शिक्षण निशुल्क कर दिया है। जिसके कारण

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

वे लोग जो स्त्री शिक्षा को अनुपयोगी मानते थे अब वे भी इसके महत्व को समझने लगे हैं। उन्होंने भी अपनी पुत्रियों को विद्यालय भेजना शुरु कर दिया है। वर्तमान मे सरकार ने बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए गार्गी पुरस्कार, स्कूटी वितरण, साइकिल वितरण आदि अनेक ऐसी योजनाएँ चलाई है, जिससे कन्या शिक्षा को बढ़ावा मिला है, लोगो की सोच बदली है। नि:शुल्क कन्या शिक्षण के अन्तर्गत बेटियो की पढ़ाई के लिए पुस्तके, उनके पाठ्य सामग्री तथा अन्य सुविधाएँ भी उपलब्ध कराई गई है, अतः यह सरकार का एक सराहनीय कृत्य है।

उत्तर (7)

फीचर

(अ) "शहर मे बढ़ता प्रदूषण"

मनुष्य प्रकृति की गोद मे निवास करता है, प्रकृति ने हमे अनेक अद्भुत उपहार प्रदान किए है जिनका उपयोग हम अपने दैनिक जीवन मे करते है। लेकिन आज के मनुष्य के दिमाग से ये बाते तो पता नही गायब ही

Scr

परीक्षार्थी उत्तर

हो गई है, अतः यह लगातार प्रदूषण किए जा रहा है, आज शहर में प्रदूषण लगातार बढ़ता ही जा रहा है। शहरो मे आज खुली सांस लेने के लिए प्राण वायु भी ठीक ढंग से उपलब्ध नही हो पाती है, उसमे भी अनेक कार्बन कणो का धुंआ ही सभी शरीर मे पहुँच रहा है, जो शरीर को लगातार खोखला बनाए जा रहा है। आज शहरो मे फैक्ट्रियो से निकला प्रदूषित जल लगातार लोगो को बीमार व कमजोर बना रहा है। शहरो मे नदी तालाब आदि सभी प्रदूषित हो चुके है। शहरो मे ध्वनि प्रदूषण भी धीरे-2 अपनी जड़े जमाने लगा है, जिसके दुष्परिणाम हमे टिटनिस, बहरापन आदि बिमारियो के रूप मे देखने को मिल रहा है। आज शहरो मे वायु प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण, जल प्रदूषण धीरे-2 अपनी पकड़ मजबूत बनाते जा रहे है। शहरो से वृक्ष निरंतर कटते जा रहे है, जो इस विषैली वायु को खींचकर हमे प्राणवायु प्रदान करते है। आज बढ़ते हुए प्रदूषण के कारण शहरो मे रहना कठिन हो चला है, यदि जल्दी ही इस समस्या का समाधान नही किया गया, तो इसका परिणाम शहरीवासियो को एक भयंकर प्राकृतिक आपदा के रूप मे झेलना पड़ सकता है, क्योंकि प्रकृति कभी भी अपने ऊपर इस प्रकार दुराचार बर्दाश्त नही करेगी।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

"खण्ड -ग"

काव्यांश

(8) सचमुच मुझे ______ ______ प्यारा है।

(अ) कवि दण्ड इसीलिए पाना चाहता है क्योंकि उसे लगने लगा है कि अज्ञात प्रिय के इतने ज्यादा प्रेम तथा अतिममता तथा अतिसमीपता के कारण उसका व्यक्तित्व दबने लगा है, उसकी आत्मा पराश्रित हो गई है, अतः वह अपने व्यक्तित्व को मजबूत बनाने के लिए तथा परिमार्जित करने के लिए दण्ड पाना चाहता है।

(ब) उत्तर: कवि दण्ड के रूप में पाताली गुफाओं के विवरों अर्थात दरारों में तथा धुएं के बादलों में रहने को उद्यत होता है।

(स) उत्तर: कवि जीवन की सुखद तथा दुखद दोनों स्थितियों को स्वीकार करना चाहता है क्योंकि इन सभी में उसके प्रिय का संवेदन है, उसका एहसास है, अतः ये सारी चीजें कवि के प्रियतम को अतीव प्रिय हैं अतः कवि भी इन चीजों को अपना प्रिय समझते हुए इन्हें

Scr

प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

प्रसन्नता पूर्वक स्वीकारता है।

द.) उत्तर:- "वह तुम्हारे ही कारण के कार्यों का घेरा है" का अर्थ यह है कि कवि ने अपने जीवन मे अभी तक जितने भी कार्य किए है, वे सभी उसके अज्ञात प्रियतम की प्रेरणा से प्रेरित होकर किए है, इन सभी कार्यों मे उसके प्रिय की प्रेरणा छिपी हुई है।

9.) काव्यांश :-
मैं निज ...
... फिरता हूँ।

(अ) उत्तर:- भाव सौन्दर्य:- प्रस्तुत पक्तियों मे कवि हरिवंशराय बच्चन ने अपने जीवन के बारे मे बताया है कि वह अपने हृदय के विचारो को लेकर चलते है, उनके द्वारा लिखी गई कविताओ को वे सभी को उपहार स्वरूप भेंट करते है। परन्तु कवि को यह संसार अपूर्ण लगता है तथा उन्हे यह अपूर्ण संसार नही भाता क्योंकि यह संसार स्वार्थ भावना, राग द्वेष आदि से भरा हुआ है। वे तो अपनी ही कल्पना का संसार लिए चलते है।

ब.) शिल्पगत विशेषताएँ:-

1.) प्रस्तुत पंक्तियो मे "खड़ी बोली हिन्दी" का

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

प्रयोग हुआ है।

2. इसमें "रुबाई" छन्द का प्रयोग हुआ है।

3. भाषा सहज, सरल, प्रवाहमयी है।

4. तत्सम शब्दों का सुन्दर प्रयोग हुआ है।

उत्तर (10.)

उत्तर

अ.) तितलियों की इतनी नाज़ुक दुनिया "पंतगों के लिए" कहा गया है, क्योंकि पंतगे तितलियों के समान ही कोमल, रंगबिरंगी तथा नाज़ुक होती है तथा आसमान में उड़ती है।

उत्तर

ब.) उत्तर:- अट्टालिका ऊँचे-2 भवनों को कहते हैं, कवि इन्हें आंतक भवन इसीलिए कहता है क्योंकि यह भाव व्यंजित करना चाहता है कि इन भवनों में रहने वाले पूंजीपतियों के मन में सदैव अपनी धन सम्पत्ति के छिन जाने का भय समाया रहता है। तथा वे आंतक से ग्रसित रहते हैं।

(11.) पठित गंद्यांश:-

सेवक धर्म में ———— गद्गद् हो उठी।

प्रश्न / परीक्षार्थी उत्तर

उत्तर
अ) उत्तर:- भक्तिन को सेवाभाव में हनुमान जी से स्पर्धा करने वाली बताया गया है, क्योंकि जिस प्रकार हनुमान जी सदैव भगवान श्रीराम की भक्ति में लगे रहते थे, उसी प्रकार भक्तिन सदैव महादेवी वर्मा की सेवा सुश्रुषा में लगी ~~रहती~~ रहती थी।

ब) उत्तर:- "जीवन में कभी-2 अपने नाम का विरोधाभास लेकर चलना पड़ता है" इस कथन का आशय यही है कि महादेवी वर्मा की भी सदैव अपना नाम अपने चरित्र के अनुकूल नहीं लगता था, ~~क्योंकि~~ वे भी इसे अनुकूल नहीं मानती थी इसी प्रकार भक्तिन का नाम भी लक्ष्मिन था, जो कि वैभव का सूचक होता है, जिसका उसके पास अभाव था।

उत्तर
स) लक्ष्मी अपना नाम भक्तिन पाकर गद्‌गद हो उठी, क्योंकि उसकी वेशभूषा तथा उसके चरित्र के अनुरूप ही यह नाम उचित था तथा उसे यह नाम अपने लिए बिल्कुल उचित प्रतीत हुआ।

उत्तर
(१५)

उत्तर
अ) उत्तर:- "शिरीष के फूल" पाठ में लेखक हजारी प्रसाद द्विवेदी जी ने जिजीविषा तथा संघर्षशीलता की अद्भुत व्यंजना की है। उन्होंने बताया है कि शिरीष

प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

के फूल, इसके पत्ते पुष्प अत्यन्त कोमल होते है, लेकिन फिर भी भयंकर आंधी, लू, धूप मे भी थे अपने जीवन को चलाय रखने के लिए संघर्ष करते है। लेखक बताता है कि जब गर्मी के समय मे धरती निर्धूम अग्नि कुण्ड के समान दहकती रहती है, सारी वातावरण गर्मी से संतप्त रहता है, अन्य पौधे तथा पेड सब सुख जाते है। तब मात्र शिरीष का वृक्ष ही वायुमण्डल से रस खींचकर अपने आप को जिवित बनाए रखता है। तथा अत्यन्त कोमल फूलो को पैदा करता रहता है, तथा जिवित बना रहता है। अतः लेखक ने शिरीष के वृक्ष के माध्यम से जिजिविषा तथा संघर्षशीलता की व्यंजना की है।

ब) उत्तर:- "नमक" कहानी एक संवेदना से भरी हुई कहानी है जिसमे प्रमुख पात्र सी सिख बीबी, पाकिस्तानी कस्टम अधिकारी, भारतीय कस्टम के अधिकारी आदि है, इन पात्रो ने अपने २ विचारो से मूल संवेदना को व्यक्त किया है, कि विस्थापन,

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

का दर्द व्यक्ति को हमेशा पीड़ित करता है।" विस्थापित होने के बाद भी व्यक्ति कभी सुखी नहीं रह सकता, क्योंकि वह अपनी मातृभूमि से बिछड़ा रहता है। अतः इस कहानी के माध्यम से लेखक ने विस्थापितों की अपने देश के प्रति आत्मीयता तथा उनके विस्थापित होने के दर्द की मूल संवेदना को व्यक्त किया है।

ट.) उत्तर:- जाति प्रथा आर्थिक दृष्टि से अत्यन्त हानिकारक होती है, क्योंकि जाति प्रथा के कारण व्यक्ति का पेशा उसके जन्म के साथ ही निर्धारित कर दिया जाता है, तथा उसे जीवनभर इसी पेशे को अपनाना पड़ता है, चाहे वह अन्य पेशे में रूचि रखता हो, तथा उसमें पारंगत भी हो, परन्तु फिर भी उसे अपना पेशा बदलने की अनुमति नही होती। अरुचिपूर्ण पेशे में होने के कारण उसे धन कमाने में कठिनाई होती है तथा कभी-2 बेरोजगारी का सामना भी करना पड़ता है। इससे समाज में आर्थिक हानि होती है, क्योंकि इसके कारण व्यक्ति की कार्यक्षमता प्रभावित होती है तथा वह चालू काम करने लगता है। तथा समाज आर्थिक रूप से कमजोर होता है।

परीक्षार्थी उत्तर

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक

" सिल्वर वैडिंग " कहानी मे कहानीकार ने यशोधर बाबू को पुरानी तथा नयी पीढी के बीच उलझा हुआ दिखाया है। यशोधर बाबू स्वयं आधुनिक जीवन शैली नहीं अपनाते है, लेकिन अपने बच्चो द्वारा अपनाई गई यह आधुनिक जीवन शैली उन्हे कुष्ट देती है, इस प्रकार कहानी मे यशोधर बाबू तथा उनके बच्चे तथा पत्नी के बीच तनातनी तथा आपसी तनाव चलता रहता है। अतः कहानीकार इसके माध्यम से हमे यही संदेश देना चाहता है कि "नयी पीढी के अनुसार जीना तथा नई परम्पराओ को अपनाना चाहिए, लेकिन पुरानी तथा सही परम्पराओ का भी सम्मान करना चाहिए"। नए जमाने की हर चीज को यशोधर बाबू की तरह "समहाउ इंप्रापर" नही मानना चाहिए।

(ग) उत्तर - "जूझ" आत्मकथा एक किशोर के देखे गए तथा भोगे गए ग्रामीण जीवन

Scr

प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

तथा रंगारंग ग्रामीण परिवेश का वर्णन किया गया है। इसमें इस किशोर के द्वारा ग्रामीण जीवन शैली से बाहर निकलने की चाह व्यक्त की गई है। किशोर खेती को सही नहीं मानता है तथा उसके द्वारा पढ़ाई करने की इच्छा व्यक्त की गई है। यह कहानी कथा नायक आनंदा के संघर्षशील चरित्र तथा उसके पढ़ाई में लगने तथा जीवन में उभरने के भाव को बताती है, अतः कहानी के माध्यम से कथाकार ने किशोर जीवन की अकुलाहट, लालसा पढ़ने की इच्छा तथा ग्रामीण संस्कृति के रंगारंग तथा देहाती परिवेश का चित्रण किया है, जो कि इस पाठ की मूल संवेदना है।

प्रश्न (14.)

उत्तर अ.) डायरी की लेखिका ऐन फ्रेंक प्रकृति को जीवन का सबसे बड़ा वरदान समझती है उनके अनुसार प्रकृति का आनंद हर कोई किसी भी क्षण किसी भी स्थिति में ले सकता है। प्रकृति के आनंद से बढ़कर जीवन में कहीं कोई सुख नहीं है अतः ऐन ने प्रकृति की सुन्दरता के दर्शन को ही जीवन का सबसे बड़ा सुख माना है।

प्रश्न | परीक्षार्थी उत्तर

प्रश्न (ब) उत्तर: पुरातत्व वेत्ताओं को सिन्धु घाटी सभ्यता की खुदाई से जो अवशेष प्राप्त हुए है, उनसे पता चला है कि सिन्धु घाटी सभ्यता साधन सम्पन्न थी, यहाँ गेहूँ, कपास, सरसो की खेती होती थी, तथा बैलगाड़ी जैसे यातायात के साधन थे, साथ-2 यहाँ जल निकासी तथा कुँए के निर्माण की अच्छी व्यवस्था भी थी, अतः लेखक ने सिंधु घाटी सभ्यता को "तर सभ्यता" कहा है।

प्रश्न (15.) (अ) उत्तर यशोधर बाबू पहाड़ी क्षेत्र से आए हुए ग्रामीण व्यक्ति थे, जो कि सदैव अपने आप को बड़ा बुजुर्ग मानते थे, वे सदैव यही चाहते थे कि उनके बच्चे उन्हे समाज के बड़े बुजुर्ग माने तथा उनका सम्मान करे। वे सदैव यही चाहते थे कि उनके बच्चे उनसे हर बात मे सलाह ले, तथा उनकी कही गई बातो को भी माने। यशोधर बाबू का पिछले कुछ सालो से अपने बच्चो से बार-2 बात-2 पर मतभेद होने लगा था, इसी कारण अब उनका व्यवहार बच्चो के प्रति

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

शुष्क तथा ईर्ष्यायुक्त हो गया था। यशोधर बाबू को अपने बच्चों की वह खुशहाली अच्छी नहीं लगती थी, जो अपनों में परायापन पैदा करे। अपने बड़े बेटे भूषण द्वारा अपने वेतन को मनमानी से खर्च करना अच्छा नहीं लगता था। वे सदैव यही चाहते थे कि उनके बच्चे सदैव उनका सम्मान करे, उन्हें अपना बड़ा - बुजुर्ग माने, उनके साथ जिम्मेदारियाँ निभाऐं तथा हर काम को करने से पूर्व उनकी सलाह अवश्य ले। इसी प्रकार का व्यवहार यशोधर बाबू अपने बच्चों से चाहते थे।

(3.) निबन्ध:-

(ब) "कन्या भ्रूण हत्या: मानवता पर एक कलंक"

1.) प्रस्तावना:- ईश्वर ने जब इस सृष्टि की रचना की, तब उसने नर तथा नारी जीवन चक्र के दो पहियों का निर्माण किया था, जिनके परस्पर संतुलन से ही मानव का जीवनरूपी रथ अच्छी प्रकार से चल सकता है लेकिन आज ग्रामीण समाज अपनी रुढ़ियों, पुरानी सामाजिक मान्यताओं के कारण एक जघन्य अपराध को जन्म दे रहा है, जो

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

कि कन्या भ्रूण हत्या है। वर्तमान मे कन्या भ्रूण हत्या लगातार बढ़ती जा रही है। इसने सारे ग्रामीण क्षेत्रों मे अपनी पकड़ मजबूती से बनाए हुए है।

2) कन्या भ्रूण हत्या के कारण :-

प्रारंभ मे जब "अल्ट्रा - सोनोग्राफी" मशीन का आविष्कार हुआ, तब यह मानव समाज के विभिन्न रोगों के निदान मे सहायक थी। लेकिन यह सत्य है कि यदि किसी चीज के लाभ होते है, तो उसके दुष्परिणाम भी होते है। कुछ समय बाद इसका दुष्परिणाम "कन्या भ्रूण हत्या" के रुप मे देखने को मिला। इसके द्वारा माता के गर्भ मे स्थित भ्रूण के लिंग की जाँच कर उसे जान ली जाती है तथा भ्रूण के कन्या का होने पर उसे मरवा दिया जाता है। इस मशीन के कारण दिनोंदिन कन्या भ्रूण हत्या लगातार बढ़ती जा रही है। इसके कारण दिन-प्रति दिन कन्या भ्रूण मिलने की घटनाएँ आम बन गई है। आज लोगों की विकृत मानसिकता तथा समाज मे कुप्रथाएँ

Scr

परीक्षार्थी उत्तर

जिनके कारण ~~स्त्रियों को~~ कन्या का जन्म लेना अनुचित माना जाता है। ग्रामीण क्षेत्रो मे लड़के तथा लड़कियो मे सदैव भेदभाव किया जाता है तथा उन्हे खोटा सिक्का माना जाता है, अतः समाज मे कन्या भ्रूण हत्या दिनोदिन बढ़ रही है।

(3) कन्या - भ्रूण हत्या के दुष्परिणामः-

कन्या भ्रूण हत्या एक जघन्य अपराध है, इसका खामियाजा आज सभी लोगो को भुगतना पड़ रहा है। आज बढ़ती हुई कन्या भ्रूण हत्या के कारण लड़के व लड़कियो का लिंगानुपात काफी बिगड़ गया है। प्रति एक हजार लड़को पर लड़कियाँ बहुत कम रह गई है, इस कारण योग्य तथा शिक्षित युवाओ को विवाह हेतु योग्य कन्याएँ नही मिल पा रही है।

दिनोदिन बढ़ती कन्या भ्रूण हत्या ने मानव सभ्यता पर ~~एक~~ बड़ा संकट पैदा कर दिया है। आज कई राज्यो जैसे हरियाणा आदि मे तो लिंगानुपात इतना ज्यादा बिगड़ गया है कि यहाँ लड़कियाँ बहुत ही कम रह गई है। तथा योग्य व शिक्षित युवक अविवाहित रह रहे है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

4) "कन्या भ्रूण हत्या को रोकने की दिशा में सरकार द्वारा उठाए गए कदम"

वर्तमान में बढ़ती हुई कन्या भ्रूण हत्या के कारण सरकार भी काफी चिंतित है, अतः सरकार ने कन्या भ्रूण हत्या निषेध कर दी है। तथा "प्रसव पूर्व निदान तकनीकि अधिनियम" (पी. एन. डी. टी.) पारित किया गया है। इसके अनुसार सोनोग्राफी सेंटरो पर भ्रूण - जाँच पर प्रतिबंध लगा दिया है।

इसके तहत यदि किसी सोनोग्राफी सेंटर में कन्या भ्रूण हत्या होती हुई पायी पाई जाती है, तो उस सोनाग्राफी सेंटर का लाइसेंस रद्द कर दिया जाता है। तथा इसे करवाने वाले डॉक्टर की डिग्री छीनकर उस पर जुर्माना लगाया जाता है।

इसके लिए सरकार ने और भी कई योजनाएँ जैसे कन्या जन्म पर पैसे देना चलाई है। जिनसे कन्या जन्म को बढ़ावा मिला है। तथा लिंगानुपात सुधरा है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

5.) उपसंहार:-

"इतना कर अहसान मैया, आने दे धरती पर मुसको
मत ले मेरी जान, मत ले मेरी जान।"

ये पंक्तियाँ उस अजन्मी बालिका की है, जो जन्म लेने से पूर्व ही अपने जीवन को लेकर भयभीत है, क्योंकि उसकी स्वंय धात्री, (माँ) ही उसे मरवा देना चाहती है। लेकिन कन्या भ्रूण हत्या जघन्य अपराध है, क्योंकि बेटी तो उस फूल की भांति है, जो खिलता है पिता की बगिया मे, परन्तु महकाता अपने ससुराल को, तथा उनके घर आंगन को। अतः दिनोदिन बढ़ती जा रही इस कन्या भ्रूण हत्या को रोकने के लिए हमे संगठित होकर समाज मे जागरुकता लाना होगा तथा लोगो को कन्याओ का महत्व बताकर जागरुक करना होगा, क्योंकि कहा गया है-

"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता"।

अर्थात जहाँ नारी की पूजा होती है, वहाँ देवता निवास करते हैं। अतः हमे कन्या भ्रूण हत्या को रोकने का प्रयास करना चाहिए, हमे सरकार के द्वारा चलाई जा रही योजनाओ मे सरकार का साथ देना चाहिए।